यही जिज्ञासा 'ब्रह्मसूत्र' का उपक्रम है, **अथातो ब्रह्मजिज्ञासा**, 'परतत्त्व के सम्बन्ध में जिज्ञासा करनी चाहिए।' श्रीमद्भागवत में परम सत्य का वर्णन इस प्रकार किया गया है: **जन्माद्यस्य यतोऽन्वयादितरतश्च**—'परब्रह्म सम्पूर्ण पदार्थों के जनक हैं।' अतः काम का उद्गम भी उन्हीं से हुआ है। इसलिए यदि काम का भगवत्प्रेम, अर्थात् कृष्णभावना, अर्थात् श्रीकृष्ण की प्रसन्नता के लिए ही सब इच्छा करने में परिणत कर दिया जाय, तो काम-क्रोध दोनों दिव्य हो जायेंगे। भगवान् राम के अनन्य सेवक श्रीहनुमानजी ने शत्रुओं पर अपने रोष का भगवत्सेवा में उपयोग किया था। इस प्रकार कृष्णभावना में नियोजित काम-क्रोध भी शत्रु नहीं रहते, वरन् मित्र बन जाते हैं।

**धूमेनाव्रियते वह्निर्यथादर्शो मलेन च।**
**यथोल्बेनावृतो गर्भस्तथा तेनेदमावृतम्।।३८।।**

**धूमेन**=धूम्र द्वारा; **आव्रियते**=ढका रहता है; **वह्निः**=अग्नि; **यथा**=जिस प्रकार; **आदर्शः**=दर्पण; **मलेन**=धूल द्वारा; **च**=तथा; **यथा**=जैसे; **उल्बेन**=गर्भाशय द्वारा; **आवृतः**=ढका हुआ; **गर्भः**=गर्भ; **तथा**=उसी प्रकार; **तेन**=उस काम द्वारा; **इदम्**=यह; **आवृतम्**=आच्छादित है।

### अनुवाद

जिस प्रकार धूएँ से अग्नि, धूल से दर्पण अथवा जेर से गर्भ ढका रहता है, वैसे ही जीवात्मा अलग-अलग अनुपात में इस काम के आवरण से ढका हुआ है।।३८।।

### तात्पर्य

जीवात्मा की शुद्ध चेतना को धूमिल करने वाला आवरण प्रगाढ़ता के अनुपात-भेद से तीन प्रकार का होता है, जैसे अग्नि में धूम्र, दर्पण पर मल तथा गर्भ को ढकने वाला गर्भाशय। इस प्रकार विविध परिस्थितियों में अलग-अलग अनुपात में अभिव्यक्त होने वाला यह आवरण काम ही है। जब काम को धूम्र की उपमा दी जाती है तो यह समझना चाहिए कि जीवात्मा का स्वरूप कुछ-कुछ अनुभवगम्य है। प्रकारान्तर से, जब जीवात्मा कृष्णभावना का हलका-सा प्रदर्शन करता है तो उसे धूएँ से ढकी अग्नि की उपमा दी जा सकती है। यद्यपि यह सत्य है कि जहाँ भी धूम्र हो वहाँ अग्नि का होना अनिवार्य है; फिर भी पहले-पहले अग्नि की प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति नहीं होती। यह अवस्था कृष्णभावनामृत के प्रारम्भ जैसी है। दर्पण पर रज का उदाहरण पारमार्थिक साधनों से चित्त रूपी दर्पण के शोधन की ओर संकेत करता है। इसकी सर्वोत्तम पद्धति भगवन्नाम-कीर्तन है। जेर द्वारा आच्छादित गर्भ के उदाहरण से एक असहाय अवस्था का दृष्टान्त दिया गया है, क्योंकि गर्भ में शिशु इतनी असहाय अवस्था में रहता है कि कुछ भी चेष्टा नहीं कर सकता। जीवन की यह अवस्था वृक्षों के तुल्य है। वृक्ष जीवात्मा हैं, किन्तु उनमें काम की प्रबलता को देखते हुए उन्हें ऐसी